गेहूँ की कृषि कार्यमाला

गेहूँ रबी की मुख्य अनाज वाली फसल है। विपुल उत्पादन के लिए नवीन उपयुक्त प्रजाति की खेती, आनुवांशिक वैज्ञानिक पद्धति से करना आवश्यक है।

1. भूमि: रेतीली मिट्टी को छोड़कर सभी प्रकार की मिट्टी गेहूँ की खेती के लिए उपयुक्त है। मध्यम से भारी भूमि इसकी खेती के लिए विशेष उपयुक्त मानी जाती है।

2. खेत की तैयारी: खरीफ फसल की कटाई के बाद एक या दो बार (आड़ी एवं खड़ी) जुताई कर के पाटा चलाएँ। बखरनी के पूर्व गोबर की खाद 5-10 टन प्रति हेक्टेयर दें। 3-4 किलो पी.एस.बी. कल्चर को एक क्विंटल गोबर की खाद या खेत की मिट्टी में मिलाकर आखिरी बखरनी के समय खेत में मिलादें।

3. किस्म का चयन: बोनी का समय तथा सिंचाई जल की उपलब्धता के अनुसार किस्म का चयन करें। अपने क्षेत्र हेतु उपयुक्त प्रमाणित एवं उन्नत किस्म का बीज ही बोयें।

4. बीज दर: छोटे दाने वाली किस्मों के लिये 100 किलो प्रति हेक्टेयर तथा बड़े दाने वाली किस्मों के लिये 125 किलो प्रति हेक्टेयर बीज उपयोग करें।

5. बीजोपचार: बोने से पहले बीज को थायरम (2.5 ग्राम प्रति किलो बीज) से उपचारित करें। बीज पर हल्का पानी छिड़ककर दवा मिलाएँ। थायरम मिलाने के बाद हाथ साबुन से अच्छी तरह धोलें। बीज का उपयोग करने के बाद इसे किसी भी खाद्य के लिए प्रयोग न करें।
बीज को अजोटोबैक्टर और पी.एस.बी. कल्चर से भी उपचारित किया जा सकता है, लेकिन थायरम, अजोटोबैक्टर और पी.एस.बी. कल्चर को एक साथ न मिलाएँ।

6. बोनी का समय: 25 अक्टूबर से 30 नवम्बर तक उपयुक्त है। लेकिन सिंचाई की उपलब्धता एवं किस्म की अवधि के अनुसार 20 अक्टूबर से दिसंबर अंत तक बोनी की जा सकती है। बीज की बोआई 8-9 इंच कतार की दूरी पर करें।

7. खाद: गेहूं फसल में नत्रजन, स्फुर व पोटाश - 4:2:1 के अनुपात में देना चाहिए।
खाद की आवश्यक मात्रा (किलो प्रति हेक्टेयर)

भूमि	नत्रजन	स्फुर	पोटाश
अर्ध सिंचित	60	40	20
सिंचित	100	50	30

गेहूं- सोयाबीन फसल चक्र में सल्फर की पूर्ति के लिए 25kg जिंक सल्फ़ेट प्रति हेक्टेयर प्रत्येक तीसरे वर्ष बीज बोने के पूर्व भुरक कर मिट्टी में मिला दे। खाद बीज से लगभग 3 से.मी. नीचे डालें।

8. खरपतवार, कीट व रोग नियंत्रण: आवश्यकतानुसार खेत की निंदाई करें और उपयुक्त खरपतवारनाशक, कीटनाशक व फफूंद नाशक का प्रयोग करें।

9. सिंचाई: किस्म एवं मिट्टी की आवश्यकतानुसार सिंचाई करें। आड़ी व खड़ी दोनों तरह से छोटी-छोटी सरियाँ बनाकर सिंचाई करें जिससे पानी की कम मात्रा लगती है।

10. फसल कटाई: जब गेहूँ की बाली सूख जाए और दाना पूर्ण रूप से पक जाए तब कटाई करें।

सूचना: यह जानकारी शासकीय अनुसंधान केंद्रों के अनुभवों पर आधारित है। मौसम व भूमि के अनुसार परिवर्तन संभव है। जिस पर हमारा नियंत्रण नहीं है।

गहू लागवड पद्धती

रब्बी हंगामातील गहू हे मुख्य धान्य पीक आहे. जास्त उत्पादनासाठी, वैज्ञानिक आणि अनुवांशिक पद्धतींचा वापर करुन नवीन 'योग्य' जातींची लागवड करणे आवश्यक आहे.

1) जमीन: अत्यंत हलक्या मगदूराची माती वगळता सर्व प्रकारची माती गहू लागवडीसाठी योग्य आहे. मध्यम ते भारी मगदूर असलेल्या जमिनीची निवड गहू लागवडीसाठी विशेषतः योग्य मानली जाते.

2) शेताची तयारी: खरीप पिकाची कापणी केल्यानंतर, शेत एक किंवा दोन वेळा (उताराच्या दिशेने) नांगरुन ते फळीने समतल करा. अंतिम मशागत करण्यापूर्वी, प्रति हेक्टर 5-10 टन शेणखत घाला. जैविक खत म्हणून मातीमध्ये 3-4 किलो पीएसबी कल्चर शेणखतामध्ये मिसळा आणि शेवटच्या मशागतीच्या वेळी शेणखतातून जमिनीमध्ये वापरले तर पिकास याचा फायदा हो ईल.

3) जातीची निवड: पेरणीचा वेळ आणि सिंचनाच्या पाण्याच्या उपलब्धतेनुसार जातीची निवड करा. विशिष्ट प्रदेशासाठी योग्य असलेले प्रमाणित आणि सुधारित बियाणेच वापरा.

4) बियाणे दर: लहान दाणेदार वाणासाठी, प्रति हेक्टर 100 किलो बियाणे वापरा आणि मोठ्या दाणेदार वाणासाठी, प्रति हेक्टर 125 किलो बियाणे वापरा.

5) बियाणे प्रक्रिया: पेरणी पूर्वी बियाण्यावर थायरम (प्रति किलो बियाणे 2.5 ग्रॅम) प्रक्रिया करा. बियाण्यावर थोडेसे पाणी शिंपडा आणि रसायन मिसळा. थायर ममिसळल्यानंतर, हात साबणाने पूर्णपणे धुवा. कोणत्याही अन्नासाठी प्रक्रिया केलेले बियाणे वापरु नका. बियाण्यांवर ॲझोटोबॅक्टर आणि पीएसबी कल्चरने देखील प्रक्रिया केली जाऊ शकते, परंतु थायरम, ॲझोटोबॅक्टर आणि पीएसबी कल्चर एकत्र मिसळू नका.

6) पेरणी चीवेळ: योग्य पेरणीचा कालावधी 25 ऑक्टोबर ते 30 नोव्हेंबर आहे. तथापि, सिंचनाची उपलब्धता आणि जातीच्या कालावधीनुसार, पेरणी 20 ऑक्टोबर ते डिसेंबर अखेरपर्यंत करता येते. 8-9 इंच ओळींच्या अंतरावर बियाणे पेरणी केली जाते.

7) खते: गहू पिकाला 4:2:1 च्या प्रमाणात नायट्रोजन, फॉस्फरस आणि पोटॅश द्यावे.
आवश्यक खतांचे प्रमाण (किलो प्रति हेक्टर):

पीकपद्धत	नत्र	स्फुरद	पालाश
अर्ध सिंचन	60	40	20
पुर्णसिंचन	100	50	30

गहू-सोयाबीन पीक पद्धतींसाठी, पेरणीपूर्वी दर तिसऱ्या वर्षी 25 किलो झिंक सल्फेट प्रति हेक्टर वापरा. जमिनीत मिसळून खत घाला. बियाण्यांपासून सुमारे 3 सेमी खोलवर खत टाकावे.

8) तण, कीटक आणि रोग नियंत्रण: गरजेनुसार शेतात निंदणी करणे आवश्यक आहे. योग्य तणनाशके, कीटकनाशके आणि बुरशीनाशके वापरा.

9) सिंचन: गहू पिकाच्या वाणानुसार आणि मातीच्या गरजेनुसार सिंचन करा. पाणी वाचवण्यासाठी सिंचनासाठी शेतात आडव्या दिशेने आणि लांबीच्या दिशेने लहान सरी तयार करा.

10) काढणी: गव्हाची ओंबी साधारणतः पिवळसर रंगाची किंवा सुकल्यावर म्हणजेच धान्य पूर्णपणे परिपक्व झाल्यानंतर कापणी करा.

टीप: वरील माहिती सरकारी संशोधन केंद्रांच्या प्रयोगांवर आधारित आहे. यामध्ये हवामान आणि मातीनुसार बदल होऊ शकतात, जे आपल्या नियंत्रणाबाहेर आहेत.

Wheat Cultivation Practices

Wheat is the main cereal crop of the Rabi season. For high yield, it is essential to cultivate newly suitable varieties using scientific and genetic methods.

1) Land: All types of soil, except sandy soil, are suitable for wheat cultivation. Medium to heavy soil is considered especially suitable for its cultivation.

2) Field Preparation: After harvesting the Kharif crop, plow the field one or two times (crosswise and lengthwise), and level it with a plank. Before the final tillage, apply 5-10 tons per hectare of farmyard manure. Mix 3-4 kg of PSB culture in one quintal of farmyard manure or in soil, and incorporate it into the last tillage.

3) Variety Selection: Select the variety according to sowing time and irrigation water availability. Use only certified and improved seeds suitable for the specific region.

4) Seed Rate: For small-grained varieties, use 100 kg seed per hectare, and for large-grained varieties, use 125 kg seed per hectare.

5) Seed Treatment: Treat the seed with Thiram (2.5 g per kg seed) before sowing. Sprinkle a little water on the seed and mix the chemical. After mixing Thiram, wash hands thoroughly with soap. Do not use treated seeds for any food purpose. Seeds can also be treated with Azotobacter and PSB culture, but do not mix Thiram, Azotobacter, and PSB culture together.

6) Sowing Time: The suitable sowing period is from 25 October to 30 November. However, depending on the availability of irrigation and variety duration, sowing can be done from 20 October to the end of December. Sow seeds at a row spacing of 8–9 inches.

7) Fertilizer: The wheat crop should be given nitrogen, phosphorus, and potash in a 4:2:1 ratio. Required fertilizer quantity (kg per hectare):

Land Type	Nitrogen	Phosphorus	Potash
Semi-irrigated	60	40	20
Irrigated	100	50	30

For wheat-soybean cropping systems, apply 25 kg zinc sulfate per hectare every third year before sowing by mixing in soil. Place fertilizer about 3 cm below the seed.

8) Weed, Pest, and Disease Control: Weed the field as needed and use suitable herbicides, insecticides, and fungicides as appropriate.

9) Irrigation: Irrigate as per the requirements of the variety and soil. Form small furrows crosswise and lengthwise in the field for irrigation to save water.

10) Harvesting: Harvest when the wheat spike dries up and the grains are fully mature.

Note: his information is based on experiences from government research centers. Changes may occur depending on weather and soil, which are beyond our control.